दैनिक भास्कर
रविवार, 24 जनवरी 2021 नोएडा

प्राकृतिक सुंदरता का अनोखा नजारा

आज की भागती दौड़ती जिंदगी में हर कोई किसी भी तरह समय निकालकर अपनी दिनचर्या में अपनी सुविधानुसार सैर करने का प्रयास करता रहता है। इस ओर सबकी जागरूकता देखी जा सकती है। हम सब जानते हैं और स्वीकार भी करते हैं, कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपनी दिनचर्या में किसी न किसी रूप में व्यायाम करना जरूरी है।

गीतांजलि सक्सेना

किसी महापुरुष ने कहा है, कि सुबह की सैर पूरे दिन के लिए एक वरदान समान है, क्योंकि सुबह की सैर ना सिर्फ आपको तरोताजा रखती है, बल्कि बहुत सारी बीमारियों से लड़ने की शक्ति भी देती है। इसका मुख्य कारण है स्वच्छ हवा, जो आपको दिन भर की भाग दौड़ में तो बिल्कुल नहीं मिलती। आजकल के प्रदूषण भरे माहौल में शुद्ध ऑक्सीजन मिलना बहुत मुश्किल है। सुबह मात्र आधा घंटे सैर करना, किसी जिम में घंटों पसीना बहाने से ज्यादा फायदेमंद होता है। यही नहीं, हर वर्ग के लिए यह सबसे सरल और सस्ता साधन है। जो लोग उम्रदराज हैं,उनके लिए तो सुबह की सैर अमृत समान है। मानो या ना मानो, लेकिन सुबह सैर करने से इंसान की उम्र ही बढ़ती है।

फिर हम सबमें से अनेक प्रकृति प्रेमी ऐसे भी हैं, जो मौका मिलते ही अक्सर प्रकृति के निकट जा कर आनंद लेते हुए मिलते हैं। फिर वह चाहे समुद्र किनारे इठलाती लहरों के साथ हो, या बागों में हरियाली के बीच फूलों को अंगड़ाई लेते देख रहे हो। प्रकृति की लीला ही है निराली, जिससे हमें अपने जीवन में आसपास चीजों को जानने की सृजनात्मक शक्ति मिलती रहती है और बहुत कुछ सिखाती भी है, पर हम सब जानते हुए भी इसके महत्व को आसानी से अनदेखा करते रहे हैं। मनुष्य को जीवन में प्रकृति के बनाये नियमों के तहत अपनी जीवनशैली में बदलाव लाना अति आवश्यक हो गया है। ईश्वर से प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों को संभालने और संजोने की जिम्मेदारी काफी हद तक हमारे हाथों में ही है। दरअसल, पर्यावरण सन्तुलन की अनदेखी करके उसे चुनौती देना भारी घातक साबित हो रहा है। यही कारण है कि आज दुनिया भर में पर्यावरण संरक्षण हेतु किए हर प्रयास और प्रयोग भी सीमित से लगते हैं।

हम सब कहीं के भी हों, किसी भी वातावरण में हों, प्रकृति की ओर अपना रुझान और उसकी अहमियत को जानने के लिए हमें अपनी जिज्ञासा में तेजी लानी होगी। एक दूसरे के अनुभव को हम चाहे किसी भी देश में हों, उनको सभी से बांटें। प्रकृति के संरक्षक की ओर किए गये छोटे बड़े कार्य और प्रयासों से सबको सीख लेनी चाहिए। इसमें कोई दो राय भी नहीं है, क्योंकि कोई भी नई सीख हमें उस विषय से सम्बन्धित जानकारी हासिल करने को प्रेरित करती है। यही हमारी आंतरिक और बाहरी शक्ति को जगाने में काफी हद तक कारगर भी साबित होती है। मान्यता है, कि अनुभव को साझा करने से भी एक सुखद अनुभूति होती है। इतना ही नहीं, हर एक नई सीख में प्रकृति का निर्देश और दिशा छुपा होता है।

पर्यावरण सन्तुलन

इसी को ध्यान में रखते हुए आज चलिए आप के साथ उस जगह की सैर करें, जो आबूधाबी शहर के जुबैल द्वीप में बना है। यह बहु-प्रतीक्षित और सुन्दरता से भरा नया बना प्रकृति पार्क है, जिसे मैं ग्रोववांक के नाम से भी जाना जाता है। इस पार्क की खूबसूरती यह है कि यहाँ सैर करने के लिए पानी में तैरते लकड़ी के प्लेटफार्म पर अद्भुत पैदल मार्ग बनाये गए हैं, जहाँ प्रकृति प्रेमियों को मैरीन जीवों और प्राकृतिक जल संरक्षक जातियों को देखने और उनके बीच समय बिताने का सुखद अवसर प्राप्त होता है। इस पार्क में एक मिलियन वर्ग मीटर का इलाका सिर्फ मैं ग्रोवो से ही भरा है। यह शहरी शोर से दूर एक शान्त, सिर्फ आकर्षण का केन्द्र ही नहीं, बल्कि तटीय विकास और मैंग्रोव के संरक्षक की ओर महत्वपूर्ण कदम भी है।

प्राकृतिक सुंदरता का यह अनोखा नजारा, जहाँ बड़े-ऊंचे पेड़, फूलों से लदीं डालियां नहीं, सागर लहरों का उफान का शोर भी नहीं ... सिर्फ कुदरती तट-रक्षक कहलाने वाले मैंग्रोव जंगल हैं। इनके बीच सैर करना कुछ अलग जरूर लगता है, किन्तु इस अनुभव में इनकी दुनिया और प्रकृति को समझने की जिज्ञासा अवश्य ही बढ़ जाती है। इनके बारे में और अधिक जानकारी हासिल करने की ओर ध्यान को केंद्रित भी करता है। मैंग्रोव ऐसे क्षुप व वृक्ष होते हैं, जो तटीय क्षेत्रों में होते हैं,जहां नदी का पानी समुद्र के खारे पानी में मिलता है। यह पेड़ों की एकमात्र प्रजाति है, जो खारे पानी में भी जीवन रख पाते हैं। इसके वन बहुत घने होने के साथ विभिन्न आकार में देखे जा सकते हैं। दुनिया के कई देशों का बहुत बड़ा हिस्सा मैंग्रोव वनों से भरा हुआ है। भारत के पूर्वी इलाके में इनके जंगलों का अधिकांश विकास हुआ है। इनमें सुंदरवन का नाम प्रमुख है। प्राकृतिक आपदा के संकट से बचने के लिए मैंग्रोव के महत्व को जानना और समझना होगा। मैंग्रोव विशेष रूप से पानी के नीचे रहने वाले जातियों का प्राकृतिक शरणस्थल है, जिन्हें यहां एक नर्सिंग वातावरण प्रदान है। यह प्राकृतिक आपदा के प्रभाव को भी कम करने की क्षमता रखते हैं, जिससे तूफान और चक्रवात के समय क्षति कम होती है। यह वन, धरती और समुद्र के बीच तीव्र जलधाराओं को रोकने में बफर का काम करते हैं, इसलिए इन्हें कुदरती तटरक्षक भी कहते हैं। मैंग्रोव समुद्र के पानी को साफ करने में जल शोधक की भूमिका निभाने का कार्य करते हैं, और वातावरण में कार्बन डाइ आक्साइड को घटाते भी हैं। इनकी प्रकृति में पुनर्जीवित होने तक की प्राकृतिक क्षमता होती है। गौरतलब है कि मैंग्रोव वनों का प्रयोग अनेक रूपों में किया जाता है। तटीय क्षेत्र में रहने वाले निवासियों द्वारा इनका प्रयोग भोजन, ईंधन, लकड़ी के लिए करते हैं। वन्य पौधों की विशेषताओं का ज्ञान होने के कारण, स्थानीय लोग इनका इस्तेमाल औषधि के लिए भी करते हैं।

> वन जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में मैंग्रोव एक महत्वपूर्ण हथियार है। यह हम सब को नहीं भूलना चाहिए। तभी तो हम आने वाली पीढ़ी को समृद्ध मैंग्रोव वन विरासत में दे सकेंगे।

इन सारे तथ्यों पर प्रकाश डालकर साझा करने के पीछे एकमात्र उद्देश्य यही तो है कि, हम अपने ग्रह के भविष्य की रक्षा करते हुए ... मैंग्रोवों की सुरक्षा और उनके संरक्षण हेतु उपयुक्त उपाय और प्रयास भी करें। आज दुर्भाग्यवश मनुष्य के क्रियाकलापों के कारण दुनिया भर में मैंग्रोव का क्षेत्र घटता ही जा रहा है।

वर्तमान स्थिति में इन पर मंडराते खतरे को ध्यान में रखना होगा। इनकी सुरक्षा और संरक्षण के लिए बनाई प्रबंधन योजनाओं में तेजी लाकर और क्रियाशील करनी होंगी। वन जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में मैंग्रोव एक महत्वपूर्ण हथियार है। यह हम सब को नहीं भूलना चाहिए। तभी तो हम आने वाली पीढ़ी को समृद्ध मैंग्रोव वन विरासत में दे सकेंगे। प्रकृति के निकट रहें, अपने चारों ओर ही तो है, प्रेम करें, कुछ समय बिताएं, छवि अनोखी निराली, पूर्णता वास्तविक, आनंद लें, न बिछाओ कांटे रास्तों में।

> प्रकृति के बीच अनोखी सैर... अद्भुत अनुभव